P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-4* December- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

धनकोली गाँव का इतिहास एवं भित्ति चित्रण

पवन कुमार जाँगिड
व्याख्याता,
चित्रकला विभाग,
श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
किशनगढ, राजस्थान

सारांश

मारवाड़ के नागौर जिले की डीडवाना तहसील में घनकोली गाँव स्थित है। कायमखानियों शासकों के बाद जोधपुर के राठौड़ राजवंश ने इसे मुसलमान शासकों से छीन कर अपने राज्य के अधीनस्थ कुचामण ताल्लुका के अन्तर्गत इसके शासन की व्यवस्था कर दी। इस क्षेत्र का नाम ''झाड़ोद पट्टी'' पड़ा था। इस क्षेत्र की विशेष बात यह है कि यहाँ के गढ़ में मारवाड़ कला परम्परा का तथा हवेलियों में शेखावाटी भित्ति चित्रण परम्परा का समन्वय व विस्तार देखने को मिलता है। गढ़ में अनेक भित्ति चित्र देखने को मिलते हैं। धनकोली गाँव में अनेक चित्रित हवेलियाँ हैं। इस क्षेत्र में एक कहावत प्रचलित रही हैं – ''अमर नाम–गीतड़ा या भींतड़ा'' अर्थात जिसके गीत (रचना) बन गए वह तथा जिसने भीतें यानी भव्य इमारतें खड़ी कर दी उनका नाम अमर हो गया।

मुख्य शब्द : भित्ति चित्र, देखा–देखी, जागिरदार, ठिकाना, सामन्त, महाजन, हवेलियां, गढ़, ओपन आर्ट गैलरी, झाड़ोद पट्टी, जकात, रंग, फिटकरी, हिरमिच, पीलिया भाटा, गीतड़ा या भींतड़ा, जूनी, गवाई कुआँ, कायमखानी, मेड़तियां राजपूत, बणजारे, काफिले, दस्तावेज, बहियाँ, परवाने, फरमान, कबाडी़, भोजपत्र, तस्वीरें, देशी कागज, लिखावट, कलात्मक, बंदूकिये, ऊँट, सवार, शतरंज, धार्मिक, लौकिक, ताल्लुका।

प्रस्तावना

वीर प्रसविनी राजस्थान की भूमि कला, साहित्य एवं संस्कृति के गौरवमयी इतिहास से ओतप्रोत रही है। यहाँ का कलात्मक वैभव समृद्धि के शीर्ष स्थान पर रहा। प्राचीन काल से ही भारत में भित्ति चित्रण परम्परा का विस्तार देखने को मिलता रहा है। इस दृष्टि से राजस्थान का भी विशेष स्थान रहा है। इस प्रदेश की भव्य कलात्मक हवेलियाँ, किले, महल, देवालय, छतरियाँ गढ़, कुवें, इत्यादि स्थापत्य के नमूने अथवा यहाँ की मूर्त्तिकला, भित्तिचित्र, लघुचित्र, ग्रंथचित्र या फिर लोक कलाएँ, सभी राजस्थान के कलात्मक वैभव की कीर्ति को बयाँ करते हैं। उन पर बने भित्ति चित्रों का सांस्कृतिक एवं कलात्मक वैभव अनुपम रहा है। राजस्थान के राज्याश्रय मे फली फूली लघुचित्र शैलियों के साथ–साथ भित्ति चित्रण परम्परा का विकास और विस्तार होता रहा है। यहाँ के बड़े–बड़े राज दरबारों की देखा–देखी छोटे–छोटे जागिरदारों, ठिकानों, सामन्तों एवं महाजनों ने हवेलियों में भित्ति चित्रण की इस परम्परा को जीवित रखा। इसलिए शेखावाटी की हवेलियों को दुनिया की सबसे बड़ी "ओपन आर्ट गैलरी" कहा जाता है। इस क्षेत्र में छोटे से छोटे गाँव की हवेलियाँ भी चित्रित मिलती हैं। शेखावाटी की हवेलियों के चित्रण की इस परम्परा का विस्तार शेखावाटी समीपवर्ति मारवाड़ में भी देखने को मिला।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय एवं राजस्थानी भित्ति चित्रकला के इतिहास एवं इसके विस्तार को जानना।
2. राजस्थान राज्य के प्रमुख राजदरबारों में विकसित चित्रकला का विकास, भित्ति चित्रों एवं प्रमुख चित्र शैलियों के बारे में जानना।
3. बड़े–बड़े राज दरबारों के अलावा छोटे–छोटे जागिरदारों, ठिकानों, सामन्तों एवं महाजनों की हवेलियों, गढ़ों, मंदिरों में बने भित्ति चित्रण की परम्परा का विकास और विस्तार का अध्ययन करना।
4. मारवाड़ की भित्ति चित्रण की परम्परा के विस्तार का अध्ययन करना एवं अब तक ओझल रहे घनकोली गाँव के भित्ति चित्रों की खोज कर प्रकट करना।
5. घनकोली गाँव के गढ़ एवं प्रमुख हवेलियों के भित्ति चित्रण को प्रत्यक्ष देखना और इस ऐतिहासिक भित्ति चित्रण विरासत को ऊजागर करना।

6. घनकोली के इतिहास व भित्ति चित्रों का अध्ययन करना व हमारी कला, रहन–सहन व संस्कृति को जानने का प्रयत्न करना।
7. ऐसे भित्ति चित्रण युक्त स्थलों को ऊजागर करने के साथ ही पुरातत्व विभाग एवं राज्य सरकार से इनके संरक्षण व सुरक्षा हेतु ध्यान आकर्षित करना।
8. सामान्य जनता को इन भित्ति चित्रों के महत्व को बताकर इनकी सुरक्षा की अपील करना।

साहित्यावलोकन

गुप्ता, बेनी की पुस्तक में राजस्थान के इतिहास एवं रस्तोगी, साधना की पुस्तक में मारवाड़ के इतिहास एवं क्षेत्रफल को प्रस्तुत किया गया है। नीरज, जयसिंह एवं गोस्वामी, प्रेमचन्द, की पुस्तकों में राजस्थान की चित्रकला एवं लघु चित्र शैलियों के विकास व विस्तार का विस्तृत विवेचन किया गया है।

खान, मुबारक (आजाद) की पुस्तक "धनकोली : आज तक" में धनकोली गॉव के परम्परागत काल से वर्तमान काल तक के इतिहास, क्षेत्रफल, संस्कृति, शासन व्यवस्था इत्यादि का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शास्त्री, श्री देवदत यह पुस्तक मौलासर–धनकोली गॉव के महाजनों के इतिहास व हवेलियों के विषय में जानकारी को प्रस्तुत करने में सहायक रही है।

मारवाड़ का इतिहास व भित्ति चित्रण

मारवाड़ की राजनैतिक सीमा सर्वथा समान नहीं रही। इसका क्षेत्रफल संकीर्ण और विस्तृत होता रहा है।[1] मारवाड़ की सीमाओं के अन्तर्गत विकसित चित्रकला एवं उसके चित्रण केन्द्र प्रायः राठौड़ शासकों के ही रहे हैं, फिर भी स्थानीय चित्रकारों व उनके प्रश्रय के अनुरूप उनमें कलात्मक भिन्नतायुक्त मौलिक चित्रण पद्धतियों का विस्तार होता गया। इस वृहद् भूखण्ड के प्राचीन क्षेत्रों में मारवाड़ी चित्र संस्कृति का विकास होता रहा है।[2] जोधपुर महाराजा जसवन्तसिंह चित्रकला के पोशक रहे और महाराजा अजीत सिंह को भी चित्रों का शोक था। साथ ही नागौर, कुचामन और जालौर भी चित्रकला के विकास के केन्द्र थे।[3] मारवाड़ में कला के राजकीय मान को देखकर सामन्तों ने भी कला को प्रोत्साहित किया तथा केवल जोधपुर में ही नही वरन् सारे मारवाड़ में 19वी शताब्दी के आरम्भिक समय में चित्र बने – कुचामन, घाणेराव, नागौर, पाली, जालौर इत्यादि प्रमुख नगरों में चित्र–शालायें बनी तथा सहस्त्रों की संख्या में चित्र बनने का उल्लेख मिलता है।[4] राठौड़ शासकों ने अनेक भवनों, राजप्रसादों का निर्माण करवाया। इस समय अनेक चित्रण क्षेत्र विकसित हुए। राठौड़ शासकों एवं उनके वंशजों ने मारवाड़ क्षेत्र की चित्रण परम्पराओं को विकसित किया। जोधपुर में भी छोटे–छोटे नगरों में बने चित्रों की एक स्वतंत्र शैली रही है जो नागौर, कुचामन, जालौर, तथा जैसलमेर शैली कहलाती थी। यहाँ के ग्राम्य चित्र भी अपना एक स्थान रखते हैं जो अत्यधिक संख्या में चित्रित हुए हैं। यहाँ के प्रधान नगरों में चित्रकला के उत्तम उदाहरण मिलते हैं, जो प्रमाणित करते हैं कि जोधपुर की सीमा में सर्वत्र चित्र विद्या का प्रसार था। नागौर, पाली, जालौर, कुचामन, मेड़ता, धनकोली, मौलासर, बॉसा–निमोद, भदलिया, पांचवा आदि अनेकों स्थान हैं, जहाँ चित्र बने तथा छोटे–छोटे ठिकानेदार अर्थात जागीरदारों में भी चित्रों का व्यसन था। हम किसी भी स्थान की कलाओं के द्वारा वहाँ के इतिहास का मूल्याकंन कर सकते हैं और इतिहास के द्वारा वहाँ की कलाओं के विषय में जान सकते हैं। इसलिए कला व इतिहास एक दूसरे के पूरक है।

धनकोली का इतिहास

मारवाड़ क्षेत्रीय नागौर जिले की डीडवाना तहसील में घनकोली गाँव स्थित है। यहाँ गढ़, चित्रित हवेलियाँ, कलात्मक कुवें, शिलालेख देखे जा सकते हैं। इस क्षेत्र की विशेष बात यह है कि यहाँ मारवाड़ कला परम्परा एवं शेखावाटी कला परम्परा का समन्वय व विस्तार देखने को मिलता है। कायमखानी शासकों ने मारवाड़ क्षेत्र के डीडवाना परगना के क्षेत्र को अपने अधिकार में ले लिया था। इस क्षेत्र का नाम ''झाड़ोद पट्टी'' पड़ा था।[5] ई. 1568 के लगभग जोधपुर के राठौड़ राजवंश ने इसे मुसलमान शासकों से छीन कर अपने राज्य के अधीनस्थ कुचामण ताल्लुका के अन्तर्गत मौलासर–धनकोली के शासन की व्यवस्था कर दी। तब से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक यह कुचामन ठिकाने के अधीन रहा।[6] धनकोली के पाँच कि.मी. पूर्व में शेखावाटी क्षेत्र का सीकर जिला प्रारम्भ होता है। यहाँ प्राचीन समय में बनजारों के काफिले रहे थे। बादशाह–राजा महाराजा युद्ध के दौरान अपनी फौज की रसद का जिम्मा इन्हीं बनजारों को सौंपते थे। बीकानेर और शेखावाटी से चलकर दक्षिण में जाने के लिए पहले कई मार्ग थे। ये बनजारे धनकोली, कुचामन, डीडवाना आदि स्थानों पर रुकते तथा विशेष रूप से खाद्य सामग्री, मसाले, कपड़ा, रंग, फिटकरी, हिरमिच, पीलिया भाटा, नमक इत्यादि का आदान–प्रदान करते थे। गढ़ के भित्ति चित्रों में बने व्यापारी का चित्र इसकी प्रमाणिकता सिद्ध करता है। धनकोली का जमींदार बावनी का पट्टायत कहा जाता था अर्थात 52000 बीघा भूमि इस ठिकाने के अधिकार में रही थी। पहाड़ान जमींदारों के समय 18 गाँव धनकोली के अधीन थे। इसके पश्चात् कायमखानी ठाकुरों का अधिकार रहा। कायमखानी शासक जब मारवाड़ के डीडवाना परगने में आये तो इन्होंने ''झाड़ोद पट्टी'' के गाँवों को अपना निवास स्थान बनाया। सन् 1500 ई. में बेरी के अलावद्दीन खां के पश्चात् इनका पुत्र आसल खां गद्दी पर बैठा तथा इनके भाई माखनखां को धनकोली की जागीरी मिली। वि. सं. 1609 में पहाड़ खाँ यहाँ का जागीरदार बना। इसने वि.सं. 1632 में अपनी ठकुरानी हरकंवर के लिए गढ़ के मुख्य द्वार के पास मुरलीधर जी का मंदिर बनवाया था। इससे यह निश्चित होता है कि गढ़ का निर्माण वि.सं. 1632 से पहले हो चुका था। यह मंदिर हिन्दू–मुस्लिम एकता का बेजोड़ नमूना धनकोली में आज भी पारस्परिक सद्भावना की प्रेरणा देता है। इसके पश्चात् कानूखां तथा लाडखां को क्रमशः धनकोली की जागीरदारी उत्तराधिकार में मिली। संवत् 1808 में यह जमींदारी कुचामन वंष के मालम सिंह मेड़तिया को जोधपुर नरेश की अनुकम्पा से सहज ही प्राप्त हो गई।[7] मालमसिंह की पत्नि पन्नेकंवर ने ही कुचामन शासक सूरजमल के पुत्र शिवदान सिंह को गोद लेकर वापिस धनकोली का शासक बना दिया था।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-4* December- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

इसके पश्चात् ठा. हुकमसिंह (1880–1891), पृथ्वीसिंह (1891–1905), ठा. सतीदान सिंह (सं.1905–1930), पाबूदान सिंह, गोविन्द सिंह (सं.1970–1973), अमरसिंह (1974–1983) तथा तेजसिंह (अन्तिम शासक) क्रमशः धनकोली के शासक रहे।

धनकोली गाँव का गढ़ एवं भित्ति चित्रण

धनकोली के गढ़ (चित्र सं. 1) में मारवाड़ शैली का षानदार भित्ति चित्रण मिलता है। यहाँ के ठाकुरों का जयपुर, जोधपुर, शेखावाटी के क्षेत्रीय ठाकुरों से वैवाहिक सम्बन्ध भी रहे थे। सेठ साहूकारों की बहु बेटियों को लाने ले जाने के लिए विश्वसनीय कायमखानियों के ऊँट ही भाड़े पर भेजे जाते थे। ऊँटों का चित्रण, उन पर सवार यात्रीगण, व्यापारिक मार्ग में विश्राम स्थल धनकोली एवं राजाओं कि ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण यहाँ के भिति चित्रों में देख सकते हैं। मारवाड़ के सांभर, डीडवाना, पचभद्रा एवं सुजानगढ़ में नमक बनता था। राजपुताने से नमक और अनाज गुजरात और गंगा प्रदेशों को जाता था। मारवाड़ के प्रमुख व्यापारिक केन्द्रों से व्यापारी अपना माल ले जाने के लिए कई मार्ग बना रखे थे। व्यापारी भिवानी और मारवाड़ के मध्य शेखावाटी मार्ग पर अनेक ठाकुरों द्वारा जकात (व्यापारिक कर) ली जाति थी। यह तथ्य भी धनकोली के व्यापारिक मार्ग एवं ऊँटों के चित्रण से सत्य प्रतीत होता है।[8] (चित्र सं. 2)

चित्र सं. 1. धनकोली गाँव का गढ़

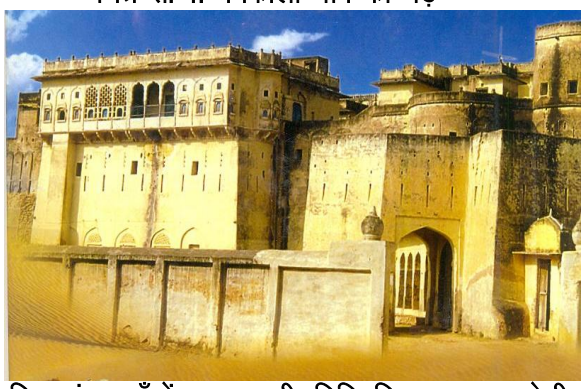

चित्र सं. 2. ऊँटों का व्यापारी, भित्ति चित्र, गढ़, धनकोली

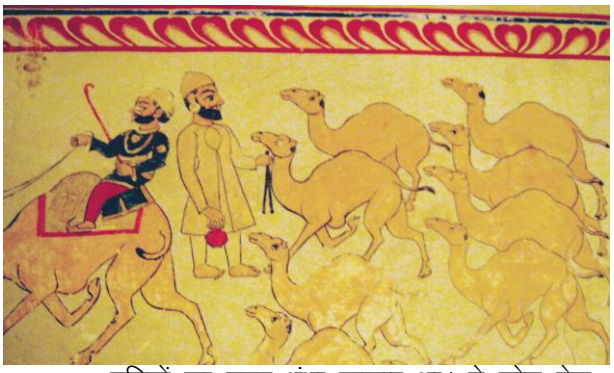

बनियों का मुख्य धंधा व्यापार था। ये लोग देश के कोने–कोने मे फैल गये और देश के सबसे धनाढ्य व्यक्ति बन गये फलस्वरुप इन्होंने विशाल हवेलियों का निर्माण कर चित्रों से अलंकृत करवाया। धनकोली गाँव में अनेक हवेलियाँ हैं। जिन पर शेखावाटी हवेलीं चित्रण की इस परम्परा का विस्तार देखने को मिलता है। इस क्षेत्र में एक कहावत प्रचलित रही हैं –''अमर नाम–गीतड़ा या भींतड़ा'' अर्थात जिसके गीत (रचना) बन गए वह तथा जिसने भीतें यानी भव्य इमारतें खड़ी कर दी उनका नाम अमर हो गया। यहाँ के प्रमुख सेठों में रुईया, धानुका, मूंघड़ा, सारड़ा, तापड़िया और रेनवाल से आये महाजन, सोमानी इत्यादि हैं। रामगढ़ सेठों का यहाँ आगमन भी भित्ति चित्रण का प्रमुख कारण रहा होगा क्योंकि रामगढ़ सेठान् (शेखावाटी क्षेत्र) में हवेली चित्रण का इस समय प्रचलन रहा था। शेखावाटी और मारवाड़ क्षेत्रों में इन महाजन दानियों ने चित्रित हवेलियाँ, कुएँ–बावड़ियाँ, धर्मशालाएँ, पाठशालाएँ इत्यादि बनवायी।

धनकोली में खेतावतों के मोहल्ले में अनेक जूनी हवेलियाँ हैं। इनमें से कई हवेलियों पर भित्ति चित्र बने तथा कई पर सफेदी करवा दी गई एवं कुछ खाली और सूनी पड़ी है। इनके स्वामी आसाम, कोलकाता, मुंबई आदि स्थानों पर चले गये तथा यदा–कदा अवसर विशेष पर ही गांव आते हैं। धनकोली की प्रमुख भित्ति चित्र युक्त हवेलियाँ :–

1. झूमरमल जी खेतावत की हवेली : इस हवेली के ऊपरी भाग में बने भित्ति चित्र आने जाने वाले राहगीरों को आकर्षित करते हैं।
2. नथमल रामनिवास जी सोमानी की हवेली पर सुन्दर चित्रकारी है।
3. रामनिवास बजरंगलाल खेतावत की हवेली।
4. एक झरोखानुमा हवेली है जिसे धनकोली का हवामहल कहा जाता है। इसमें भी सुन्दर चित्रांकन है।
5. सागरमल की हवेली
6. लादूराम घीसालाल खेतावत की हवेली
7. निमोदियों की हवेली
8. बगड़िया जाटों की हवेली
9. मोरों की हवेली
10. कन्हैयालाल माणिकचंद की हवेली।

उपरोक्त हवेलियों के अतिरिक्त पहाड़ खाँ द्वारा निर्मित मुरलीधरजी के मंदिर में भी चित्रांकन था। जिसका जीर्णोद्धार करवाने के कारण भित्ति चित्रांकन नष्ट हो गया। इसके अलावा गवाई कुआँ और कानाराम की छतरी, इमरतिया कुआँ तथा खेतावतों का बाड़ी वाला कुआँ के मरवों पर बने अलकरणों के अवशेष भी यहाँ की चित्रांकन परम्परा की गाथा कहते हैं।

धनकोली गढ़ में शानदार भित्ति चित्रांकन मिलता है। इस गढ़ में भित्ति चित्रांकन के कई कारण माने जा सकते हैं जिनमें :–

1. कायमखानियों के पश्चात् यह गढ़ मेड़तियां राजपूतों को मिला था। मारवाड़ के मेड़तियां राजपूतों के अधिकांश गढ़ों में चित्रण की परम्परा का होना इस तथ्य को सिद्ध करता है।
2. शेखावाटी तथा बीकानेर से दक्षिण की ओर जाने वाले प्रमुख मार्गों में धनकोली गाँव भी इन मार्गों के बीच पड़ता जहाँ बणजारों के काफिले ठहरते थे तथा विशेष रूप से खाद्य सामग्री, मसालें, कपड़ा, रंग, फिटकरी, हिरमिच, पीलिया भाटा, नमक इत्यादि का

आदान–प्रदान करते थे। रंगों का व्यापार करना भी यहाँ के भित्ति चित्रण का एक कारण माना जा सकता है। गढ़ के भित्ति चित्रों में बने ऊँटों के टोले (समूह) का विश्राम करना, व्यापारी का चित्र इस तथ्य की प्रमाणिकता सिद्ध करता है। (चित्र सं. 2)

3. वि.सं. 1632 में पहाड़ खाँ ने अपनी ठकुरानी हर कंवर के लिए गढ़ के मुख्य द्वार के पास मुरलीधर जी का मंदिर बनवाया जो हिन्दू–मुस्लिम एकता का बेजोड़ नमूना है।

धनकोली गढ़ से सम्बन्धित दस्तावेज बहियाँ, परवाने और फरमान आदि के महत्व को न जानने के कारण रद्दी में कबाड़ियों को बेच दिए गए। भोजपत्रों पर पुरानी तस्वीरें, मोटे देशी कागजों पर लिखावटें, कलात्मक चित्र ये सब कुछ अनुपयोगी समझ कर रद्दी में निकाल दिये तथा पुराने हथियार, तोपें इत्यादि कुचामन के बंदूकिये ले गए। यहाँ केवल मात्र या तो गढ़ की दीवारे या उन पर बने भित्ति चित्र शेष हैं। पहाड़ खाँ के (वि.सं. 1609) समय में मूल गढ़ पक्का अवश्य था। ठा. गोविन्द सिंह (वि.सं.1974–1983) ने काँच महल, पीछे बाग का निर्माण करवाया जबकि तेज सिंह ने तबेला व रथखाना बनवाए थे।[9] यहाँ के भित्ति चित्रों की विषय–वस्तु, शैली व तकनीक के आधार पर ये चित्र 1870–80 के प्रतीत होते हैं। धनकोली गढ़ के नवांमहल तथा काँचमहल में अनेक भित्ति चित्र बने हैं। यहाँ के भित्ति चित्र धार्मिक न होकर ऐतिहासिक तथा लौकिक घटनाओं पर आधारित हैं। गढ़ के बाहर की दीवारों पर भी घुड़सवार, गजसवार, राजाओं, सामन्तों के चित्र देखे जा सकते हैं। बहुत ही दुःख की बात है कि जहाँ पर ये चित्र बने है वहाँ पर खाना पकाया जाता है जिससे दीवारें काली हो रही है। स्थानीय संरक्षक को चित्रों का महत्व न जानने के कारण इनकी दुर्दशा हो रही है।

गढ़ के प्रमुख चित्र इस प्रकार हैं :–

1. एक चित्र में कुछ व्यापारीगण व्यापार की वस्तुएँ ठाकुर साहब को दिखा रहे हैं। चित्र के बीच में एक भवन का अंकन है जिसके एक तरफ ठाकुर के सामने दो व्यापारी तथा पीछे की तरफ व्यापारियों का चित्रांकन है।
2. एक ऊँट पर सवार दो सरदारों का अंकन है।
3. मलयुद्ध करते पहलवानों का चित्रण।
4. रथ पर सवार ठाकुर व व्यापारी गण।
5. भगवान सीता राम जी को आसन पर विराजमान दिखाया है।
6. रथ में सवार दो ठाकुर।
7. पतंगबाजी।
8. प्रवचन देते महात्मा व सामने बैठे ठाकुर, साधु गण एवं सामान्य गण।
9. गोल घेरा बनाकर नृत्य करती महिला समूह जिनके बीच में वादक समूह का अंकन भी है। (चित्र सं. 3)
10. जुलूस चित्र इसमें ठाकुर एवं ठकुरानी के सामने नाचते बजाते समूह का अंकन है जिसमें अनेक आकृतियां दर्शायी हैं। (चित्र सं. 4)
11. अभिवादन समूह इस चित्र में हाथ जोड़े 11–11 स्त्रियों का समूह है जो आमने–सामने खड़ी है।
12. हिरण व महिला का चित्र।
13. सूअर का शिकार करते घुड़सवार।
14. हाथ में डांडियां लेकर नृत्य करते हुये महिला पुरूष के गोल घेरे के मध्य बैठे वादक।
15. हाथियों की लड़ाई का चित्रण जिसके ऊपर महावत अंकित है।
16. चारपाई पर विश्राम करते ठाकुर तथा सेवा करता सेवक।
17. वीणा व सितार बजाती महिलाएँ।
18. बच्चे को गोद में लिये महिला व सामने मोर तथा कबूतरों का चित्रण।
19. ऊँटों के टोले (समूह) को ले जाते घुड़सवार तथा व्यापारी। (चित्र सं. 2)
20. शतरंज खेलती महिलाएँ।
21. शाही बग्गी।
22. शेर के शिकार का दृश्य।
23. हुक्का पिता हुआ ठाकुर।
24. घुड़सवार का पीछा करता हाथी व भाले से प्रहार करने की मुद्रा में घुड़सवार।
25. प्रतीक्षा करती नायिकाएँ।
26. चार व्यापारीगण या सैनिक जो हाथ में तलवार व ढाल लिये बैठे हैं।
27. ढोलामारू का चित्र।

उपरोक्त चित्रों के अतिरिक्त यहाँ अन्य चित्र भी हैं। सेठ साहूकारों की बहु–बेटियों को लाने ले जाने के लिए विश्वसनीय कायमखानियों के ऊँट ही भाड़े पर भेजे जाते थे। 'कायम रहे सो कायमखानी' के चरित्र पर सब को बड़ा भरोसा था।[10] इस तथ्य की पुष्टि यहाँ बने चित्रों से होती है। धनकोली में गढ़ के अतिरिक्त अनेक हवेलियों में भित्ति चित्रण मिलता है। यहाँ के प्रमुख भित्ति चित्रों से सुसज्जित हवेलियों में बजरंगबली, राधा–कृष्ण, श्रीराम जानकी, श्री विश्वनाथ, नारायण, विष्वामित्र व मेनका, राम लक्ष्मण, गजानन्द जी, रिद्धि–सिद्धि,महालक्ष्मी एवं सरस्वती, कालियादमन, साईकल सवार, घोड़ा गाड़ी में बैठे माता–पुत्र, रथ को खिंचतें ऊँट, तांगागाड़ी, हाथी, खेत की ओर जाता किसान परिवार, लक्ष्मी नारायण, अहिल्या का उद्धार करते श्रीराम, मुरली मनोहर, भारत माता, तालाब से पानी भरती स्त्री व श्रीकृष्ण, झूला झूलती स्त्री, तपस्यारत शिव इत्यादि के भित्ति चित्र अंकित है। यहाँ की हवेलियों के मुख्य द्वारों एवं छज्जों के नीचे विविध चित्र अंकित हैं। इन चित्रों में धार्मिक चित्रण के साथ लौकिक पक्ष का सुन्दर चित्रांकन हुआ है। यहाँ प्रचलित कहावत 'अमर नाम–गीतड़ा या भींतड़ा इस को यहाँ के महाजनों ने प्रमाणित कर दिया।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-4* December- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चित्र सं. 3 समूह नृत्य,गढ़, धनकोली

चित्र सं. 4 शाही सवारी, गढ़, धनकोली

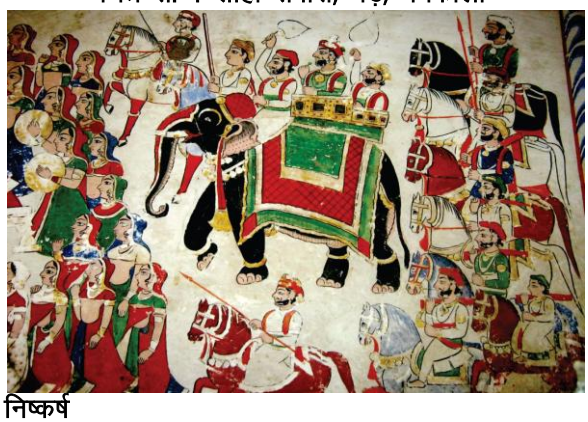

निष्कर्ष

हम देखते हैं कि राजस्थान के प्रमुख राज दरबारों की देखा–देखी छोटे–छोटे जागिरदारों, महाजनों ने भी भित्ति चित्रण करवाया जैसे कि धनकोली गाँव इसका प्रमाण है। इस गाँव के गढ़, हवेलियों में बने भित्ति चित्रों को खोजकर इस कला सम्पदा को जगजाहिर करना मेरा प्रमुख उद्देश्य था। अब तक ओझल रहे यहाँ के सभी चित्रों को प्रत्यक्ष देखने पर ऐसा लगा कि प्रत्येक चित्र यहाँ के इतिहास, कला वैभव व सांस्कृतिक विरासत को अपने में सहेज कर रखे हुये हैं। इस गाँव के भित्ति चित्रों की विशेष बात यह है कि यहाँ के गढ़ में मारवाड़ कला परम्परा तथा हवेलियों में शेखावाटी भित्ति चित्रण परम्परा का समन्वय व विस्तार हुआ। ऐसे चित्रों का प्राप्त होना भारतीय चित्रकला के गौरव व समृद्धि को बढ़ाने के साथ–साथ हमारी कलाओं, संस्कृति व इतिहास के प्रतिबिम्ब के दर्पण का कार्य करते हैं। मेने स्थानीय लोगों को इनके महत्व के विषय में बताकर इस विरासत को सुरक्षित रखने का पूरा प्रयास किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *रस्तोगी, साधना, मारवाड़ का शौर्य युग, जयपुर, 1975, पृ.सं. 19*
2. *नीरज, जयसिंह, स्प्लेन्डर ऑफ राजस्थानी पेन्टिंग, दिल्ली, 1991, पृ.सं. 12*
3. *गुप्ता, बेनी, राजस्थान का इतिहास, जयपुर, 1998, पृ.सं. 34*
4. *गोस्वामी, प्रेमचन्द, राजस्थान की लघु चित्र शैलियां, जयपुर, 1972, पृ.सं. 48*
5. *खान, मुबारक, धनकोली : आज तक, धनकोली, 2004, पृ.सं. 35*
6. *शास्त्री, श्री देवदत, सोमानी सन्दर्भ, भोपाल, 1970, पृ. सं. 83*
7. *खान, मुबारक, धनकोली : आज तक, धनकोली, 2004, पृ.सं. 50–51*
8. *रस्तोगी, साधना, मारवाड़ का शौर्य युग, जयपुर, 1975, पृ.सं. 19–20*
9. *खान, मुबारक, धनकोली : आज तक, धनकोली, 2004, पृ.सं. 68*
10. *वही पृ.सं. 69*